Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XVI, Oct-2014, ISSN 2230-7540

स्वामी रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिकता का विवेकानन्द के चिन्तन पर प्रभाव

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XVI, October-2014, ISSN 2230-7540

स्वामी रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिकता का विवेकानन्द के चिन्तन पर प्रभाव

Mani Ram

Research Scholar, Singhania University, Rajasthan

सारांश – नरेन्द्रनाथ को रामकृष्ण का व्यवहार विचित्र सा लगा और उन्होंने रामकृष्ण को पागल समझा किंतु तुरंत ही उन्होंने अपना प्रश्न दोहराया, श्रीमान्! क्या आपने ईश्वर को देखा है? इस प्रश्न का रामकृष्ण ने जो उत्तर दिया, उस उत्तर की नरेन्द्रनाथ को अपेक्षा भी नहीं थी। रामकृष्ण ने कहा– ''हाँ, मैं उन्हें वैसे ही देखता हूँ जैसे कि मैं तुम्हें यहाँ पर देखता हूँ।'' नरेन्द्रनाथ पर श्री रामकृष्ण के इस उत्तर का बहुत ही गहरा प्रभाव हुआ। यद्यपि इस एक ही मुलाकात में उन्होंने उनके सामने समर्पण नहीं किया, परन्तु निरन्तर मुलाकातें बढ़ती गईं और परमहंस का नरेन्द्रनाथ पर प्रभाव भी बढ़ता ही गया। विवेकानन्द ने थोड़े दिनों तक मानसिक प्रतिरोध की स्थिति के बाद गुरु के समक्ष पूरी तरह समर्पण कर दिया। विवेकानन्द के शब्दों में, 'आजकल यह एक साधारण बात हो गई है और सभी लोग बिना आपत्ति के ही इसे मान लेते हैं कि मूर्तिपूजा दोषयुक्त है। मैं भी एक समय ऐसा ही सोचा करता था और इसके प्रायश्चित के रूप में मुझे एक ऐसे महानुभाव के चरणों में बैठ कर शिक्षा ग्रहण करनी पड़ी, जिन्होंने मूर्तिपूजा से ही सब कुछ अर्जित किया था।' स्वामी रामकृष्ण परमहंस के वचनों का स्वामी विवेकानन्द पर स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। इस कथन की पुष्टि के लिए यहां कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने अनेक उपदेशों में वेदान्त दर्शन को स्पष्ट किया है। उनका कहना था कि ईश्वर एक है जबकि उसके रूप अनेक हैं।

----------X----------

भूमिका

नरेन्द्र को विचारकों तथा वैज्ञानिकों की समृद्ध परम्परा विरासत में मिली थी। उनके परदादा राममोहन दत्त कलकत्ता सुप्रीमकोर्ट के प्रसिद्ध वकील थे। जहां इस खानदान को धन–ऐश्वर्य तथा ख्याति प्राप्त थी, वहां ज्ञान–चर्चा और शास्त्र–चर्चा भी इस परिवार की विशेषता थी। समय के साथ–साथ चलते हुए अर्थ और मोक्ष, भोग और त्याग तथा आधुनिकता और प्राचीनता दत्त परिवार के स्वभाव तथा चरित्र में घुल–मिल गई थी। राममोहन के इकलौते बेटे दुर्गाचरण ने समय की प्रथा के अनुसार जहां संस्कृत और फारसी पढ़ी थी, वहां कामचलाऊ अंग्रेजी भी सीखी थी और वे छोटी ही उम्र में वकालत के धंधे में पड़ गए थे, पर उनका स्वभाव पिता से भिन्न था, धन कमाने में उनकी अधिक रूचि नहीं थी। धर्मानुरागी युवक दुर्गाचरण सत्संग और शास्त्र–चर्चा के अवसर और सुयोग खोजते रहते थे। परिणाम यह हुआ कि जब उनकी अवस्था सिर्फ पच्चीस वर्ष थी, तो उत्तर–पश्चिम प्रदेशों से आए वेदान्ती साधुओं से वे इतने प्रभावित हुए कि घरबार छोड़ कर सन्यास ग्रहण कर लिया। पति वियोग में तड़पती हुई जवान पत्नी के लिए गोद का नन्हा बालक ही एकमात्र सहारा रह गया। सन्यासी प्रथा के अनुसार बारह वर्षों के उपरान्त बाद जब दुर्गाचरण अपनी जन्मभूमि का दर्शन करने आए तो पत्नी का एक साल पहले देहान्त हो चुका था। उन्होंने अपने बालक पुत्र विश्वनाथ को आर्शीवाद दिया और चले गए। इसके बाद उन्होंने कभी घर में कदम नहीं रखा और न ही किसी ने उन्हें देखा

साहित्य–पुनरावलोकन

कलकत्ता में कायस्थ वंश के कई दत्त परिवार थे। इन परिवारों में बहुत से योग्य और विद्वान व्यक्ति पैदा हुए। विवेकानन्द के समकालीन इतिहासकार रमेशचन्द्र दत्त उनमें से एक थे। विवेकानन्द का जन्म इसी कायस्थ परिवार में हुआ था, परन्तु रोमां रोलां ने उन्हें क्षत्रिय वंश में उत्पन्न हुआ बताया है। शायद उन्हें यह भ्रांति इसलिए हुई कि खुद विवेकानन्द ने विदेश यात्रा से लौटकर अपने मद्रास के भाषण में प्रसंगवश कहा थाः ''एक बात और उल्लेखनीय है कि मैंने समाज–सुधारकों के मुखपत्र में पढ़ा कि मैं शूद्र हूँ, और मुझसे पूछा गया कि एक शूद्र को सन्यासी होने का क्या अधिकार है? तो इस पर मेरा उत्तर यह है कि मैं उन महापुरुष का वंशधर हूँ, जिनके चरणकमलों पर प्रत्येक ब्राह्मण 'यमाय धर्मराजाय चित्रगुप्ताय वैनमः' उच्चारण करते हुए पुष्पांजलि प्रदान करता है और जिनके वंशज विशुद्ध क्षत्रिय हैं। यदि अपने पुराणों पर विश्वास हो, तो इन समाज–सुधारकों को जान लेना चाहिए कि मेरी जाति ने पुराने जमाने में अन्य सेवाओं के अतिरिक्त, कई शताब्दियों तक आधे भारत पर शासन किया था। यदि मेरी जाति की गणना छोड़ दी जाए, तो भारत की वर्तमान सभ्यता का क्या शेष रहेगा? अकेले बंगाल ही में मेरी जाति में सबसे बड़े दार्शनिक, सबसे बड़े कवि, सबसे बड़े इतिहासज्ञ, सबसे बड़े पुरातत्त्ववेत्ता और सबसे बड़े धर्म–प्रचारक उत्पन्न हुए हैं। मेरी ही जाति ने वर्तमान समय में सबसे बड़े वैज्ञानिकों से भारतवर्ष को विभूषित किया है। इन निन्दकों को थोड़ा अपने देश के इतिहास का तो ज्ञान प्राप्त करना था; ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य तीनों वर्णों के संबंध में जरा अध्ययन तो करना था, जरा यह तो जानना था कि तीनों ही वर्णों को सन्यासी होने और वेद के अध्ययन करने का समान अधिकार है, ये बातें मैंने तो यूं ही प्रसंगवश कह दीं। वे महानुभाव, जो मुझे शूद्र कहते हैं, इसकी मुझे तनिक भी पीड़ा नहीं। मेरे पूर्वजों ने गरीबों पर जो अत्याचार किया था, इससे उसका कुछ तो परिशोधन हो जाएगा। यदि मैं पैरिया (नीचे चाण्डाल) होता, तो मुझे और भी आनन्द आता, क्योंकि मैं उन महापुरुष का शिष्य हूँ, जिन्होंने सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण होते हुए भी एक

www.ignited.in

पैरिया (चाण्डाल) के घर को साफ करने की अपनी इच्छा प्रकट की थी।

शोध पद्धति

स्वामी विवेकानन्द के दर्शन पर सबसे बड़ा प्रभाव उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस का है। उनका जीवन ही रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं को व्यवहार में चरितार्थ करने के लिए समर्पित था। विवेकानन्द जो उस समय नरेन्द्रनाथ थे, अपने प्रश्न का समाधान करने के लिए जब परमहंस के पास पहुंचे तो उन्हें देखते ही रामकृष्ण ने उनकी आध्यात्मिक शक्तियों को पहचान लिया। उन्होंने कहा, 'देव! मैं जानता हूँ कि तुम वह प्राचीन ऋषि नर हो, नर के वेश में नारायण के अवतार हो, जो पृथ्वी पर मानव जाति के दुखों को दूर करने के लिए जन्म लेता है। नरेन्द्रनाथ को रामकृष्ण का यह व्यवहार विचित्र सा लगा और उन्होंने रामकृष्ण को पागल समझा किंतु तुरंत ही उन्होंने अपना प्रश्न दोहराया, श्रीमान्! क्या आपने ईश्वर को देखा है? इस प्रश्न का रामकृष्ण ने जो उत्तर दिया, उस उत्तर की नरेन्द्रनाथ को अपेक्षा भी नहीं थी। रामकृष्ण ने कहा– ''हाँ, मैं उन्हें वैसे ही देखता हूँ जैसे कि मैं तुम्हें यहाँ पर देखता हूँ।'' नरेन्द्रनाथ पर श्री रामकृष्ण के इस उत्तर का बहुत ही गहरा प्रभाव हुआ। यद्यपि इस एक ही मुलाकात में उन्होंने उनके सामने समर्पण नहीं किया, परन्तु निरन्तर मुलाकातें बढ़ती गईं और परमहंस का नरेन्द्रनाथ पर प्रभाव भी बढ़ता ही गया। विवेकानन्द ने थोड़े दिनों तक मानसिक प्रतिरोध की स्थिति के बाद गुरु के समक्ष पूरी तरह समर्पण कर दिया। विवेकानन्द के शब्दों में, 'आजकल यह एक साधारण बात हो गई है और सभी लोग बिना आपत्ति के ही इसे मान लेते हैं कि मूर्तिपूजा दोषयुक्त है। मैं भी एक समय ऐसा ही सोचा करता था और इसके प्रायश्चित के रूप में मुझे एक ऐसे महानुभाव के चरणों में बैठ कर शिक्षा ग्रहण करनी पड़ी, जिन्होंने मूर्तिपूजा से ही सब कुछ अर्जित किया था।' स्वामी रामकृष्ण परमहंस के वचनों का स्वामी विवेकानन्द पर स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। इस कथन की पुष्टि के लिए यहां कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने अनेक उपदेशों में वेदान्त दर्शन को स्पष्ट किया है। उनका कहना था कि ईश्वर एक है जबकि उसके रूप अनेक हैं। उनके अपने शब्दों में, 'बहुत से हैं ईश्वर के रूप और असीम हैं वे रूप जो हमें उस तक ले जाते हैं। तुम चाहो जिस नाम या रूप से पुकारना चाहो उसी नाम और रूप से तुम उसको देखोगे। जिस प्रकार एक ही मिट्टी से चिड़ियों और पशुओं के बहुत से रूप बनाये जा सकते हैं उसी प्रकार एक मिट्टी की मातृ देवी की विभिन्न जलवायु और युगों में विभिन्न नामों और रूपों में पूजा होती है।' इसी तथ्य को उन्होंने अपने एक अन्य प्रिय रूपक द्वारा व्यक्त किया है, 'हिन्दू, पात्र में भरे पेय पदार्थ को 'जल' कहता है, मुसलमान 'पानी' कहकर काम चलाता है और अंग्रेज उसे 'वाटर' कहता है। पदार्थ के पर्यायवाची शब्द विभिन्न हैं परंतु पदार्थ एक ही है।' उद्देश्य सभी धर्मों का एक ही है, और वह है परमात्म–दर्शन और परमेश्वर की अनुभूति परंतु लक्ष्य प्राप्ति के साधन भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। छत पर पक्की सीढ़ी से भी चढ़ा जा सकता है और लकड़ी व बांस की सीढ़ी से भी और रस्सी के सहारे भी।' वे कहते हैं, 'विभिन्न मतावलम्बियों द्वारा बनाये गये सम्प्रदाय उसी प्रकार हैं जिस प्रकार मेड़ बांध कर किया गया भूमि का विभाजन परंतु आकाश को कोई भी विभक्त नहीं कर सकता। इसी प्रकार अज्ञानावस्था में सब अपने धर्म को ऊंचा और सच्चा बताते हैं परंतु ज्ञान होने पर एक ही ईश्वर परिलक्षित होता है।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के ये उपदेश उनके शिष्य विवेकानन्द के वचनों में परिलक्षित होते हैं। विवेकानन्द ने कहा था, 'भूतकाल में जितने भी धर्म हुए मैं उन सबको मानता हूँ और उनकी पूजा करता हूँ। मैं उनमें से प्रत्येक में, चाहे जिस रूप में वे उसकी पूजा करते हों ईश्वर की पूजा करता हूँ। मैं मुसलमान की मस्जिद में जाऊंगा, मैं ईसाई के गिरजे में जाऊंगा और क्रॉस के सामने घुटने टेकूंगा, मैं बौद्ध मंदिर में दाखिल होऊंगा जहां कि मैं बुद्ध और उसके धर्म की शरण लूंगा। मैं जंगल में जाऊंगा और हिन्दू के साथ ध्यान लगा कर बैठूंगा जो कि उस प्रकाश को देखने की चेष्टा कर रहा है जो कि प्रत्येक हृदय को प्रकाशित करता है। मैं केवल यही सब नहीं करूंगा बल्कि मैं भविष्य में जो कुछ आने वाला है उसके प्रति भी उन्मुक्त हृदय रखूंगा। सब धर्मों में समन्वय स्थापित करते हुए स्वामी जी कहते हैं कि विश्व के सब धर्म मूलतः अभिन्न हैं। प्रत्येक धर्म का उद्देश्य सीमित को असीमित का साक्षात्कार कराना है। त्रिज्याएं हजारों हो सकती हैं परंतु सभी एक केंद्र बिन्दु पर आकर मिलती हैं। वैसे ही विभिन्न धर्म पृथक–पृथक प्रतीत होते हैं फिर भी सबका मूल उद्देश्य परमतत्त्व है। इस तरह स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द के ऊपर दिये गये उद्धरणों का अध्ययन करने से यह सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि विवेकानन्द पर रामकृष्ण के आध्यात्मिक दर्शन एवं चिंतन का अमिट प्रभाव है। स्वामी विवेकानन्द ने न्यूयार्क में एक भाषण दिया जो बाद में 'माई मास्टर' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। उस भाषण में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथा आश्चर्यजनक सत्य मैंने अपने गुरुदेव से सीखा, वह यह है कि संसार में जितने धर्म हैं, वह परस्पर विरोधी या प्रतिरोधी नहीं हैं। वे केवल एक ही चिरन्तन शाश्वत् दर्शन के भिन्न–भिन्न भाव मात्र हैं। यही एक सनातन धर्म चिरकाल से समग्र विश्व का आधारस्वरूप रहा है और चिरकाल तक रहेगा, और यही धर्म विभिन्न देशों में अनेक भावों में प्रकाशित हो रहा है। मेरा धर्म अथवा तुम्हारा धर्म, मेरा राष्ट्रीय धर्म तथा तुम्हारा राष्ट्रीय धर्म अथवा नाना प्रकार के अलग–अलग धर्म आदि विषय वास्तव में कभी नहीं थे। संसार में केवल एक ही धर्म है, अनन्त काल से केवल एक ही सनातन धर्म चला आ रहा है और सदा वही रहेगा और यही एक धर्म भिन्न–भिन्न देशों में भिन्न–भिन्न रीति से प्रकट होता है। अतएव हमें सब धर्मों को मान देना चाहिए और जहां तक हो सके, उनके तत्वों में अपना विश्वास रखना चाहिए। धर्म केवल विभिन्न जाति या विभिन्न देश के अनुसार विभिन्न होता हो, ऐसी बात नहीं, वरन् पात्र के अनुसार भी वह विभिन्न होता हो, ऐसी बात नहीं, वरन् पात्र के अनुसार भी वह विभिन्न भाव धारण करता है। किसी मनुष्य में धर्म तीव्र कर्मशीलता के रूप में प्रकट होता है, किसी दूसरे में उत्कट भक्ति के रूप में, किसी तीसरे में योग के रूप में तथा किसी अन्य में तत्त्वज्ञान के रूप में। बी. एस. नरवणे के अनुसार, 'रामकृष्ण और विवेकानन्द दोनों में चिन्तन और दर्शन की एक अंतर्धारा थी, जिसने दोनों को एक दूसरे की ओर उन्मुख किया और ऐसी मान्यता है कि चेतन मन के प्रधान तत्त्व के विपरीत अचेतन मन में उसकी क्षतिपूर्ति के रूप में एक विपरीत तत्त्व सदा रहा है, हर व्यक्ति में उसके बाह्य व्यक्तित्व के अनुरूप ही आन्तरिक व्यक्तित्व भी होता है। विवेकानन्द के संज्ञानात्मक दृष्टि के पीछे दर्शन की गहरी छाप भी थी। स्वामी तुरियानन्द ने कहा है, 'जिसने विवेकानन्द की ज्वाला जैसी भावनाओं का विदीर्णकारी सहानुभूति का हल्का अंश भी नहीं देखा वह उन्हें समझ नहीं सकता। इसके विपरीत, रामकृष्ण के रहस्यात्मक आनन्दातिरेक और भावात्मक तीव्रता के पीछे ज्ञान की ज्योति छिपी हुई थी, जो निरंतर व अविचल जलती रहती थी। स्वयं विवेकानन्द भी इस बात को जानते थे। एक बार सिस्टर निवेदिता के साथ वार्तालाप में उन्होंने कहा था कि रामकृष्ण बाहर से तो भक्त हैं पर भीतर से ज्ञानयोग के योगी हैं, वे स्वयं ठीक इसके विपरीत थे, और इसी कारण दोनों के भीतर एक दूसरे का कुछ न कुछ अंश विद्यमान था, उनकी जोड़ी बहुत अपूर्व थी। उनके

संबंध की तुलना सुकरात और अरस्तू, जीसस और सेण्टपॉल के संबंध से की गई है। रोम्यां रोला उनकी तुलना मोजार्ट और बीटाबेन से करते हैं और कहते हैं दोनों ने मिलकर सर्वव्यापी आत्मा की ऐश्वर्यशाली सिम्फनी को सिद्ध किया। विवेकानन्द आजीवन यही दावा करते रहे कि वे केवल रामकृष्ण के शिष्य के रूप में लिख और बोल रहे हैं। 29 जनवरी 1900 ई. को कैलिफोर्निया में एक व्याख्यान में उन्होंने कहा था, 'जो भी विचार मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ वे मेरे गुरु के विचार हैं, उन विचारों को छोड़ कर मेरे पास अन्य मौलिक विचार नहीं हैं।'

निष्कर्ष

विवेकानन्द ने कहा है, ''मुझे एक ऐसे महापुरुष (रामकृष्ण परमहंस) के चरणों में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है– जिसका जीवन उसकी समस्त शिक्षाओं व उपदेशों की अपेक्षा उपनिषदों की एक जीवित आत्मा है। जो भारत के विभिन्न धर्मों और विचारों का समन्वय है। यदि मैं आपको एक भी सत्य बात कहता हूं तो वह उसकी, और केवल उसकी है। और यदि मैंने आपसे कोई भ्रान्तिपूर्ण या गलत बातें कहीं हैं, तो वे सब मेरी अपनी हैं और उनका उत्तरदायित्व मेरे ऊपर है।'' इस प्रकार विवेकानन्द ने अपने गुरु की वाणी का प्रचार किया। अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि रामकृष्ण परमहंस के जीवन और शिक्षाओं का भी स्वामी विवेकानन्द के जीवन और दर्शन पर विशेष प्रभाव पड़ा है तथा विवेकानन्द जीवन भर रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं का प्रचार और प्रसार करते रहे।

अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि वेदान्त के विभिन्न सम्प्रदायों एवं भारतीय दर्शनों में, जिनमें बहुत समय से विरोध या वैचारिक मतभेद चला आ रहा था, विवेकानन्द ने समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया। ''द्वैत, विशिष्टाद्वैत और अद्वैत आदि सम्प्रदायों में समन्वय विद्यमान है।'' जिस तरह हमारे षड्दर्शन महान् तत्व समूहों के अद्भुत क्रम–विकास मात्र है, जो संगीत के समान पिछले धीमे स्वर वाले परदों से उठते हैं और अंत में अद्वैत की गम्भीर ध्वनि में समाप्त होते हैं, उसी तरह अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि मतों में भी मनुष्य का मन उच्च से उच्च आदर्श की ओर अग्रसर हुआ है और अंत में सभी मत अद्वैतवाद के उच्चतम सोपान पर पहुंचकर अद्भुत एकत्व में विलीन हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भारत में विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर षष्ठ संख्या, 1992, पृ. 2/3।
2. स्वामी सत्यरूपानन्द, स्वामी विवेकानन्द और जनसाधारण, 'सेविनर' रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द–सोसायटी, जमशेदपुर, फरवरी– 1994, पृ. 37–38।
3. शंकरी प्रसाद बसु, स्वामी विवेकानन्द और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन, कन्याकुमारी।
4. वही, पृ. 26।
5. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड– 8, पत्रावली, अद्वैत आश्रम, मायावती पिथौरागढ़, कुमाऊँ, पृ. 352।
6. डॉ. रमानाथ त्रिपाठी, शंख सिंदूर शीर्षक, हिन्दुस्तान रविवासरीय, नई दिल्ली, 25 जून, 1995, पृ. 3।
7. शंकरी प्रसाद बसु, स्वामी विवेकानन्द और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन, कन्याकुमारी, विवेकानन्द प्रकाशन केन्द्र, 1991, पृ. 24–25।
8. विवेकानन्द साहित्य, दशम खण्ड, अद्वैत आश्रम मायावती, पिथौरागढ़, कुमाऊँ, हिमालय, द्वितीय संस्करण, 1989, पृ. 117।
9. शंकरी प्रसाद बसु, स्वामी विवेकानन्द और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, कन्याकुमारी, विवेकानन्द प्रकाशन केन्द्र, 1992, पृ. 22।